झारखण्ड के विकास में क्षेत्रीय दलों की भूमिका : एक अध्ययन

शोध–प्रस्तावना

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद, झारखण्ड, भारत

सामाजिक विज्ञान संकाय के

राजनीति विज्ञान विभाग में

पीएच०डी० की उपाधि हेतु

शोधार्थी

रानी कुमारी

(पंजीयन संख्या : ....)

द्वारा समर्पित

विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद, झारखण्ड

शोध निर्देशिका

डॉ संजू कुमारी

सह–प्राध्यापिका

आर. एस. मोर कॉलेज, गोविंदपुर (धनबाद)

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद, झारखण्ड

दिसंबर, २०२२

प्रस्तावना

झारखंड का इतिहास पाषाण काल से आरंभ होता है। पाषाण काल से ही मनुष्य के इस क्षेत्र में निवास के प्रमाण मिलते हैं यद्यपि एक स्वतंत्र भूराजनीतिक क्षेत्र के रूप में इसकी पहचान मगध साम्राज्य की स्थापना से पूर्व की मानी जाती है। मुगल काल में जहाँगीर और औरंगजेब के समय में यह क्षेत्र मुगलों के शासन में रहा। ब्रिटिश काल में यह बंगाल रेजीडेंसी का हिस्सा रहा और बाद में बिहार राज्य का हिस्सा बना। ब्रिटिश शासन काल में यहाँ हुए भूमिज जमींदारों के नेतृत्व में चुआर विद्रोह, गंगा नारायण सिंह के नेतृत्व में भूमिज विद्रोह, तिलका मांझी और सिद्धू कान्हू के नेतृत्व में संथाल विद्रोह और बिरसा मुंडा के नेतृत्व में उलगुलान एक प्रमुख ऐतिहासिक राजनितिक घटना थी। आजादी के बाद इसे स्वतंत्र राज्य बनाने की माँग उठी और २००० में इसे बिहार से अलग करके राज्य का दर्जा दिया गया। अतः यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि झारखण्ड में प्राचीन काल से राजनीती सारगर्भित रही जिसका क्रमवार विकास जारी है।

झारखण्ड राज्य के निर्माण में क्षेत्रीय दलों के द्वारा पृथकतावादी आन्दोलनों का एक क्रम रहा है। २०वीं सदी के प्रारम्भ से ही विभिन्न क्षेत्रीय दलों जैसे – झारखण्ड मुक्ति मोर्चा, झारखण्ड पार्टी, झारखण्ड पीपुल्स पार्टी, बिरसा सेवा दल, झारखण्ड विकास मोर्चा, ऑल झारखण्ड स्टूडेंट्स यूनियन, हुल झारखण्ड पार्टी, आदिवासी – मूलवासी जनाधिकार मंच इत्यादि के द्वारा क्रमबद्ध प्रयासों से झारखण्ड में राजनितिक चेतना का विकास हुआ और पृथक राज्य का गठन १५ नवम्बर २००० में हुआ।

साहित्यिक अवलोकन

प्रस्तावित विषय के अध्ययन हेतु मैंने कई पुस्तकों का गहन अध्ययन किया है जिसमें से कुछ का उल्लेख अग्रलिखित है।

- प्रकाश.(२००१), *"झारखण्ड – विकास और पहचान की राजनीति"*, यह पुस्तक पिछली आधी सदी में होने वाली झारखण्ड के विकास और परिवर्तन का पता लगाती है। यह अविभाजित बिहार और वर्तमान झारखण्ड के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विकास का दशक वार डाटा प्रदान करती है।

- सिंह.(२०१२), *"झारखण्ड परिदृश्य"*, यह पुस्तक संपूर्ण "झारखण्ड परिदृश्य" के वर्तमान परिवेश से संबंधित तथ्यों को स्पष्ट करने की कोशिश करता है। झारखण्ड की अनुसूची जाति तथा अनुसूचित जनजाति से संबंधित आंकड़े २००१ के अनुसार दिए गए है, साथ ही राज्य और जिला के जनसंख्या से संबंधित आँकड़े भी २०११ के जनगणना के अनुसार प्रस्तुत किए गए है। झारखण्ड के इतिहास, भूगोल, अर्थव्यवस्था तथा अन्य तथ्यों के अध्ययन के लिए यह पुस्तक उपयोगी है। लेकिन झारखण्ड के सम्बन्ध में क्षेत्रीय दलों के परिदृश्य का वर्णन नहीं है।

- सिन्हा.(२०१६), *"झारखण्ड राजनीति और हालत"*, इस पुस्तक में मैंने पाया कि झारखण्ड की राजनीति से संबंधित अधिकांश परिस्थितियों का वर्णन किया गया, साथ ही इसमें झारखण्ड सरकार द्वारा की गई विकास से संबंधित विषयों पर भी जोर दिया गया है। इस पुस्तक में लेखक ने इन बातों पर भी बल दिया है कि झारखण्ड विकास की दौड़ में पीछे न रहें, बल्कि विकसित हो और राज्य में उत्पन्न समस्याओं का अंत हो। परंतु झारखंड राज्य के विकास में क्षेत्रीय दलों की भूमिका का वर्णन नहीं है जबकि इस राज्य की गठन में खासतौर का महत्व है।

- रघुवंशी.(२०१६), *"और कितना वक्त चाहिए झारखण्ड को?"*, पुस्तक में झारखण्ड राज्य के गठन के उद्देश्य, विकास के आयाम तथा जनता की आकांक्षाओं और आशाओं का स्पष्ट वर्णन करते हुए लेखक ने प्रश्न किया है कि झारखण्ड राज्य निर्मित होने के इतने सालों में झारखण्ड का कितना विकास हुआ? झारखण्ड राज्य की अस्थिरता की वजह क्या है? विकास की तमाम संभावनाओं के बाद भी विकास की गति ठहरी क्यों हैं? झारखण्ड की विफलता के कारण और इसके इलाज के प्रभावी नुस्खें पर यह पुस्तक पूरी तरह प्रकाश डालती है।

- तिर्की.(२०१७), *"झारखण्ड आदिवासी विकास का सच"*, इस पुस्तक में संविधान की पाँचवी अनुसूची के सभी संवैधानिक प्रावधानों का वर्णन है जो आदिवासी समाज के विकास के लिए किए गए है। इसमें प्रतिकूल परिस्थितियों का भी स्पष्ट वर्णन किया गया है जिससे आदिवासी समाज का विकास बाधित हो रहा है। इस पुस्तक में झारखण्ड के नव निर्माण के मार्ग को कैसे तय किया जाए? इन तथ्यों का स्पष्ट वर्णन हैं। परन्तु इस में केवल आदिवासी जनजातियो का ही वर्णन मिलता हैं और अन्य समुदायों के बारे में लेखक मौन हैं।

- सिन्हा.(२०१६), *"ब्यूरोक्रेट्स और झारखण्ड"*", इस पुस्तक ने भारत को नई दुनिया के दमन और अन्याय से मुक्ति को समाप्त करने के मार्ग दिखाया। इस पुस्तक में झारखण्ड राज्य के विकास के कई आयामों को दिखानें की कोशिश की गई है। इस पुस्तक में लेखक ने झारखण्ड के शासकों को विकास के लिए नई दिशा दिखाने का प्रयत्न किया है, साथ ही इस पुस्तक में प्रशासनिक विकास के आयामों का स्पष्टता से उल्लेख मिलता है लेकिन सामाजिक और राजनीतिक विकास के संबंध में लेखक ने स्पष्ट वर्णन नहीं किया है।

- सिन्हा. (२०१६), *"असल झारखण्ड"*, इस पुस्तक में झारखण्ड निर्माण के पूर्व से लेकर वर्तमान परिस्थितियों का स्पष्ट वर्णन किया गया है। इस किताब में झारखण्ड का पुनःनिर्माण कैसे होगा, क्या—क्या मुख्य मुद्दे और चुनौतियाँ होंगी इत्यादि सवालों का वर्णन किया गया है। परंतु विकास के उन आयामों की स्पष्टता से व्याख्या नहीं की गयी है। यह स्पष्ट नहीं हो सका है कि इस सभी में क्षेत्रीय दलों की भूमिका क्या है।

- मिश्र, वीरेंद्र. (२०२०) *"झारखण्ड समग्र"*, यह पुस्तक झारखण्ड के ऐतिहासिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक लोकभाषा, साहित्य, झारखण्ड की शिक्षा और शिक्षण संस्थान के बारे में ज्ञान प्रदान करत है। झारखण्ड के रचनाकार, रचनाएं, पर्यावरण, आपदा प्रबंधन से संबंधित संपूर्ण जानकारी उपलब्ध है परन्तु इन तथ्यों में क्षेत्रीय दलों के योगदान का स्पष्ट वर्णन नहीं मिलता।

उपरोक्त पुस्तकों के अध्ययन के उपरांत मैंने पाया कि इन पुस्तकों में झारखण्ड के विकास के विभिन्न आयामों में क्षेत्रीय दलों के योगदान का समग्रता से उल्लेख नहीं किया गया है। जिससे कारण सारी कृतियां आंशिक, अपूर्ण, एक पक्षीय, घटनापरक प्रतित होती है। खासकर झारखंड के सभी क्षेत्रीय दलों का झारखण्ड के विकास में क्या योगदान हैं? इन तथ्यों का वर्णन नहीं किया गाया है। प्रस्तुत शोध के विषय के अंतर्गत मैं २००० ई. से आजतक की समयांतराल में झारखण्ड के विकास में क्षेत्रीय दलों की भूमिका का अध्ययन करुंगी ताकि मैं एक सार्थक विमर्श पर पहुंच सकू।

शोध की समस्या

बिहार से अलग हो कर गठित झारखंड राज्य १५ नवंबर २०२२ को २२ साल होता है। झारखंड बनाने के पीछे की मंशा यहां के लोगों के सर्वांगीण विकास की थी। यह बात अविभाजित बिहार के तत्कालीन वित्त सचिव वी0 एस0 दुबे का एक अखबार को दिये इंटरव्यू से स्पष्ट है जिसमें उन्होंने कहा था कि "बिहार सरकार दक्षिण बिहार (तब झारखंड को इसी नाम से लोग जानते – पुकारते थे।) के लिए बजट में जितना प्रावधान करती है, अगर उतने बजट को ही मान लें तो झारखंड का बजट सरप्लस ही रहेगा।'' ऐसा कहने के पीछे उनका इशारा साफ था। दरअसल खनन और उद्योग के मामले में झारखंड बिहार का समृद्ध हिस्सा था। एच.ई.सी., बोकारो स्टील प्लांट, टाटा घराने की टिस्को–टेल्को, कोयला क्षेत्र की कंपनियां – बी.सी.सी.एल., सी.सी.एल. और ई.सी.एल. और उनके प्लांट तो झारखंड के हिस्से में ही थे। इनसे मिलने वाली रायल्टी या टैक्स के रूप में राजस्व बिहार के खाते में जाते थे। बंटवारे के बाद बिहार उद्योग विहीन हो गया, जबकि झारखंड समृद्ध। परंतु झारखंड राज्य निर्माण के स्थापित उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं की जा सकी बल्कि नई राजनीतिक व्यवस्था में अस्थिरता व्याप्त होने के फलस्वरुप भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन मिला है। राजनीतिक अस्थिरता के दौर २२ साल में छह चेहरे बारी–बारी से मुख्यमंत्री की कुर्सी पर विराजते रहे। सरकारें गठबंधन से चलती रहीं। रघुवरदास की सरकार को छोड़ दें तो बाकी सभी सरकारें पांच साल का समय भी कभी पूरी नहीं कर पायीं। गठबंधन की राजनीति का एक दौर झारखंड ने ऐसा भी देखा कि निर्दलीय विधायक मधुकोड़ा मुख्यमंत्री बन गए। सीधे शब्दों में कहें तो झारखण्ड की राजनितिक अस्थिरता में मुख्य योगदान क्षेत्रीय दलों का भी रहा है। जब तक क्षेत्रीय दल सरकार के गठन और संचालन में सकारात्मक भूमिका का निर्वाह नहीं करते, तब तक इसके विकास की रूपरेखा बन भी जाए तो बेईमानी होगी। यहाँ यह कहना भी अनुचित नहीं होगा कि झारखंड की अर्थव्यवस्था विस्तार कर रही है परंतु धरातल में इसका प्रभाव दिखाई नहीं दे रहा है।

प्रस्तावित शोध में झारखण्ड के स्थापना आन्दोलन से प्रारम्भ कर वर्तमान तक झारखण्ड राज्य के विकास में क्षेत्रीय दलों की भूमिका का अध्ययन किया जायेगा। पिछले दशको में तेजी से हो रहे क्षेत्रीय दलों के विकास के फलस्वरुप राज्यों की राजनीति में क्षेत्रीय राजनीतिक दल प्रभावशाली होते जा रहे हैं। क्षेत्रीय

दलों की सरकारे अनेक राज्यों में बन रही हैं और राष्ट्रीय दल का प्रभाव कम हो रहा हैं। वर्तमान समय में सत्तारूढ़ दल केंद्र पर प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास कर रहे है। कुल मिलाकर स्थिति यह है कि केंद्र सरकार की क्षेत्रीय दलों पर निर्भरता बढ़ती जा रही है। इस शोध में झारखण्ड राज्य गठन के उत्तरार्ध २२ वर्षो का विशेष अध्ययन किया जायेगा। राज्यों प्राकृतिक संसाधनों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से लैस झारखंड राज्य आज २२ साल से अधिक अवधि पूर्ण करने के उपरांत भी इस राज्य के विकासीय व्यवस्था पर गौर किया जाए तो इस प्रदेश की नियति में मानो राजनीतिक अस्थिरता की स्थिति बनी हुई है। यदि हम झारखण्ड राज्य के २०१४ से २०१६ के कार्यकाल को छोड़ दें तो इससे पहले के १४ वर्षों में झारखण्ड ने राजनीतिक अस्थिरता की मिसाल कायम की है। इससे पहले की एक भी सरकार ने अपना कार्यकाल पूरा नहीं किया । इसके प्रमुख कारणों का अध्ययन किया जाएगा

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य

प्रस्तावित शोध विषय का मुख्य उद्देश्य झारखण्ड राज्य के विकस में क्षेत्रीय दलों की भूमिका का मूल्यांकन करना है ताकि क्षेत्रीय दलों की वास्तविक स्थिति से अवगत हो सके।

- झारखण्ड के विकास के संदर्भ में क्षेत्रीय दलों से उत्पन्न समस्याओं को जानना और उनके समाधान के लिए सुझाव देना भी इस शोध प्रबंध के उद्देश्य होंगे।
- झारखंड राज्य के क्षेत्रीय दलों द्वारा किए गए कार्यों एवं विचारधाराओं का अवलोकन करना।
- झारखंड के विकास में क्षेत्रीय दलों के सार्थकता का मूल्यांकन करना

शोध परिकल्पना

- झारखण्ड के विकास में क्षेत्रीय दलों की सार्थकता रही है।
- इस तथ्य को स्पष्ट करना कि क्षेत्रीय दल स्थानीय मुद्दों को प्रखर रूप से प्रस्तुत करते हैं।
- झारखण्ड राज्य के राजनीतिक विकास के क्षेत्र में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की भूमिका संशयप्रद रही है।
- झारखण्ड के सिवा दूसरे प्रदेश में क्षेत्रीय दल रहे है, उनके कार्य सकारात्मक है।

शोध प्रश्न

"झारखण्ड के विकास में क्षेत्रीय दलों की भूमिका : एक अध्ययन"

उपर्युक्त विषय के सम्बन्ध में मेरे मन की कुछ जिज्ञासाओं का शमन मैं प्रस्तावित शोध विषय से करना चाहती हूँ।

- झारखण्ड के निर्माण में क्षेत्रीय दलों की भूमिका क्या रही तथा उन्ही दलों का पृथक राज्य गठन के बाद झारखण्ड के विकास में क्या योगदान रहा?
- झारखण्ड की गठबन्धन की राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका क्या हैं?
- झारखण्ड आन्दोलन के परिणामस्वरूप झारखण्ड गठन के आकांक्षाएं और उम्मीदें किस हद तक पूरी हुई?
- झारखण्ड के विकास में क्षेत्रीय दलों की सार्थकता क्या रही, साथ ही सार्थकता की वृद्धि के लिए क्या सुझाव प्रस्तुत किये जा सकते हैं?
- झारखण्ड के विकास के संदर्भ में क्षेत्रीय दलों से सम्बंधित समस्याओं के समाधान के लिए क्या सुझाव दिए जा सकते हैं?
- क्या कारण है कि झारखण्ड के क्षेत्रीय दलों में झारखण्ड के विकास की नियत होते हुए भी झारखण्ड का यथोचित विकास नही हुआ ?

शोध प्रविधि

अनुसंधान कार्य को पूर्ण करने के लिए उपलब्ध विषय सामग्री एवं संबंधित तथ्यों की व्याख्या विश्लेष्णात्मक, अन्वेषणपरक एवं वर्णनात्मक तरीकों से की जाएगी। इसमें निम्नलिखित प्रविष्टियों का उपयोग किया जायेगा :–

- ऐतिहासिक विधि – प्रस्तुत शोध में झारखण्ड गठन के इतिहास और गठन के पश्चात् के २२ वर्षों में झारखण्ड के विकास में क्षेत्रीय दलों की भूमिका को एक कड़ी के रूप में अध्ययन किया जायेगा।
- विवरणात्मक विधि – झारखण्ड गठन के २२ वर्षो में उसके विकास में क्षेत्रीय दलों की भूमिका का विवरणात्मक अध्ययन किया जायेगा।

- तुलनात्मक विधि – झारखण्ड गठन के २२ वर्षो में उसके विकास को भारत के अन्य राज्यों के विकास से तुलनात्मक अध्ययन किया जायेगा।

आंकड़ा संग्रह

शोध कार्य का आधार प्राथमिक तथा द्वितीयक स्रोत होंगे। प्रस्तावित अध्ययन विषय झारखण्ड के राजनीतिक विकास में क्षेत्रीय दलों की भूमिका से संबंधित है। इस क्षेत्र से संबंधित आंकडे पर्याप्त मात्रा में द्वितीय स्रोतों में उपलब्ध है, साथ ही विभिन्न परिणामों की संतुष्टि के लिए प्राथमिक स्रोतों का संकलन कर करेंगे।

- प्राथमिक स्रोत – अनुसूची, प्रश्नावली
- द्वितीयक स्रोत – पुस्तक, पत्रिकाएं, शोध संस्थानों के प्रतिवेदन, व्यक्तिगत प्रकाशन, जर्नल, समितियों और परिषदों के प्रतिवेदन

शोध का महत्व एवं अपेक्षित योगदान

झारखण्ड में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की भूमिका का अध्ययन अभी तक उपेक्षित रहा है। क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के संबंध में कोई सैध्दांतिक संरचना बनाने का प्रयास नहीं किया गया है। झारखण्ड के निर्माण के पूर्व एवं पश्चात् भी क्षेत्रीय दलों का राजनीति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन बातों में कोई दो मत नहीं है। झारखण्ड के विकास में क्षेत्रीय दलों का प्रभाव निर्विवाद एवं सर्वस्वीकार्य है। २२ सालों में राज्य के विकास में क्षेत्रीय दलों के परिदृश्य को स्पष्ट करने का प्रयास इस शोध में सम्मिलित किया जाएगा।

- झारखण्ड आन्दोलन के परिणामस्वरूप झारखण्ड गठन के बाद लोगों की आकांक्षाएं और उम्मीदें बड़ी है जिसे पूरा करने का प्रयास किया जा रहा है और भविष्य में इसका सकारात्मक परिणाम देखने को मिल सकता है। इस तथ्य का अध्ययन आवश्यक है।
- झारखण्ड राज्य में वृद्धि हुई आर्थिक गतिविधियों और बुनियादी ढांचे के विकास के कारण व्यापक शहरीकरण हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप शहरी और अर्ध–शहरी क्षेत्रों का विस्तार हो रहा है। भूमि उपयोग नीतियों में बदलाव के कारण शहर के आसपास के इलाकों में अधिक क्षेत्रों को जोड़ा जा रहा है।

- आसानी से उपलब्ध जनशक्ति, प्रतिष्ठित तकनीकी, प्रबंधन और शैक्षिक संस्थानों, अच्छी परिवहन और संचार सुविधाएं और बिजली की स्थिति में सुधार, उद्यमियों के लिए आकर्षक बनाता है लोगों के लाभ के लिए पर्याप्त रोजगार, ढांचागत और संस्थागत सुविधाओं को उत्पन्न करने के प्रयास किए जा रहे हैं। शहरीकरण के इस युग में, औद्योगिकीकरण और आधुनिकीकरण के साथ, वर्तमान पर्यावरण को संरक्षित और सम्पोषित करने के लिए भी प्रयास हो रहे हैं। अतः सही दिशा में उतरोत्तर प्रयास को जानने की आवश्यकता है।

शोध सीमा

यह शोध कार्य झारखण्ड राज्य के विकास में क्षेत्रीय दलों की भूमिका से जुड़े तथ्यों तक सीमित है। इस शोध कार्य में झारखण्ड राज्य के राजनीतिक, आर्थिक एवम् सामाजिक विकास पर बल देते हुए क्षेत्रीय दलों की कार्यप्रणाली, भूमिका का विश्लेषणात्मक रूप में शोध कार्य किए जाएंगेद्य प्रस्तावित शोध प्रबंध में झारखण्ड के स्थापना आन्दोलन से प्रारम्भ कर वर्तमान तक झारखण्ड राज्य के विकास में क्षेत्रीय दलों की भूमिका का अध्ययन किया जायेगा तथापि झारखण्ड राज्य गठन के उतर २२ वर्षो का विशेष अध्ययन किया जायेगा।

कार्य योजना

१५ नवम्बर २००० के बाद से अगले २२ वर्षों तक राजनीतिक घटनाओ, लोकतान्त्रिक परिवर्तनों, आर्थिक, सामाजिक विकास से सम्बंधित अभिलेख, सम्बंधित समाचार पत्र की घटनाएँ इस शोध के मुख्य स्रोत रहेंगे।

२०वीं सदी के प्रारंभ से पृथक झारखण्ड गठन में क्षेत्रीय दलों के योगदान से सम्बंधित अभिलेख, समाचार पत्र की घटनाएँ इस शोध के मुख्य स्रोत रहेंगे।

शोध प्रबंध के संभावित अध्यायों की रुपरेखा

प्रथम अध्याय : क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

द्वितीय अध्याय : भारत के विकास में क्षेत्रीय दलों की भूमिका

तृतीय अध्याय : झारखाण्ड की भौगोलिक, सामाजिक एवम् आर्थिक रुपरेखा

चतुर्थ अध्याय : झारखंड में क्षेत्रीय दलों का उदय एवं विकास

पंचम अध्याय : झारखंड के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में क्षेत्रीय दलों का प्रभाव

निष्कर्ष

सन्दर्भ सूची

- तिर्की, पी. (२०१७). आदिवासी विकास का सच. प्रभात प्रकाशन, राँची.
- प्रकाश, ए. (२००१). झारखण्ड विकास और पहचान की राजनीती. ओरिऐन्ट ब्लैकस्वान, राँची.
- फैजल, ए. एम., अनिल. सुनील. (२०१६). झारखण्ड में सुशासन. प्रभात प्रकाशन राँची.
- भीषणी, दाशरथी. (२००७). भारत में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की भूमिका. मित्तल प्रकाशन.
- मिश्र, आर. के. (२०११). भारत में क्षेत्रीय राजनीतिक दल. रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर. पृ.१५
- मिश्रा, आर. के. (२०११). भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दल. रावत पब्लिकेशन, जयपुर
- सिन्हा, ए. के. (२०१६). असली झारखण्ड. प्रभात प्रकाशन, राँची.
- सिन्हा, ए. के. (२०१६). झारखण्ड राजनीति और हालात. प्रभात प्रकाशन, राँची.
- सिंह, डॉ० एस. के. (२०१५). झारखण्ड परिदृश्य. क्राउन पब्लिकेशन, राँची.
- सिन्हा, ए. के. (२०१६). ब्योरोक्रेटस और झारखण्ड. प्रभात प्रकाशन, राँची.
- हरिवंश. (२०१६). झारखण्ड सपने और यथार्थ. प्रभात प्रकाशन, राँची.

ग्रंथ – सूची

- कोराब्रिजर, स्टुअर्ट. (१६६८). आदिवासी अर्थव्यवस्था और समाज की विचारधारा–झारखण्ड में राजनीती. आधुनिक एशियाई अध्ययन. गूगल स्कॉलर.
- झारखण्ड का राजकीय वैबसाइड. झारखण्ड सरकार.
- तिर्की, पी. (२०१७). आदिवासी विकास का सच. प्रभात प्रकाशन, राँची.
- प्रकाश, ए. (२००१). झारखण्ड विकास और पहचान की राजनीती. ओरिऐन्ट ब्लैकस्वान, राँची.
- फैजल, ए. एम., अनिल. सुनील. (२०१६). झारखण्ड में सुशासन. प्रभात प्रकाशन राँची.
- ब्रांकाटी डी. (२००८). क्षेत्रीय दलों की उत्पत्ति और ताकत'. ब्रिटिश जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस
- भीषणी, दाशरथी. (२००७). भारत में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की भूमिका. मित्तल प्रकाशन.
- मिश्र, आर. के. (२०११). भारत में क्षेत्रीय राजनीतिक दल. रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर. पृ.15
- मिश्रा, आर. के. (२०११). भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दल. रावत पब्लिकेशन, जयपुर
- वासु, इ. (२०१२). मान्यता और पुनर्वितरण की राजनीती : भारत झारखण्ड और वितरण न्यायके
- विकास में,जनजातिय पहचान, राजनीती, डेवलपमेंट एंड चेंज. वाईली ऑनलाईन लाईब्रेरी.
- वासु, इप्शिता. (२०१२).'मान्यता और पुनर्वितरण की राजनीतीः भारत झारखण्ड और वितरण न्याय के विकास में,जनजातिय पहचान, राजनीती, डेवलपमेंट एंड चेंज. वाईली ऑनलाईन लाईब्रेरी.
- सिन्हा, ए. के. (२०१६). असली झारखण्ड. प्रभात प्रकाशन, राँची.
- सिन्हा, ए. के. (२०१६). झारखण्ड राजनीति और हालात. प्रभात प्रकाशन, राँची.
- सिंह, डॉ० एस. के. (२०१५). झारखण्ड परिदृश्य. क्राउन पब्लिकेशन, राँची.
- सिन्हा, ए. के. (२०१६). ब्योरोक्रेटस और झारखण्ड. प्रभात प्रकाशन, राँची.
- हरिवंश. (२०१६). झारखण्ड सपने और यथार्थ. प्रभात प्रकाशन, राँची.
- आजतक.इन